Homecoming

(A Play in Hindi/English)

By

Ashok Kumar

Kumar_incomm@yahoo.co.uk

9892250853

DO NOT COPY

Disclaimer:

This is a work of fiction and imagination. This is not about any individual or any particular family or any nationality or personality or media projections/influences or any incident/s etc. Should any person or anecdote etc. herein mentioned match even remotely with any person living or dead it shall be a matter of a pure coincidence. The idea is to bring fore the warmth and affection of family members that can be kept intact even if they live, or have lived for some time, away from each other.

The idea is not to malign any one or any group etc. but still if someone or some group/s feels that his/their sensibilities are in anyway hurt via this play it's purely un- intentional. The Play is for pure fun and enjoyment- whether while reading or/and while stage performances.

DO NOT COPY

Pitch:

Life's journey under present times scatters us across different cities and countries compelling us to live different lives. Coming together -even once in a while - can be more than just a family reunion. It can be re-bonding! Homecoming can be a beautiful tapestry of shared history reigniting the love and affection of the past making the present joyous and future re-affirming.

Plot:

A middleclass husband/wife, somewhere in north India, are waiting for arrival of their NRI son and his wife and their teenaged son. They are coming home after a long spell of remaining abroad. The parents feel disheartened when these people arrive and say they are here for a very short while. But the son and his wife make them so happy and comfortable that the reunion becomes a very joyful celebration. Re-bonding and Re-affirming their relationship.

Location:

A middle class house.

Set:

A House, of which we see three rooms, the main door and a kitchen. Stage right, at the back, is the main door of entry to the house. On one side of that is another room where-towards the background we see an opening-only partly- which is well staked large kitchen. Adjoining there is another room stage left. There is clearly an impression that there are other rooms in this house. All these visible three rooms have proper almirahs, beds, fans (or ACs) and a few boxes etc. Giving a look of an upper middle class family residence.

DO NOT COPY

Main Characters:

1. **Papa**-Rajendra Prasad Shrivastav, around 70 years of age. Retired as a senior Loco Engineer in the Railways.

2. **Amma**-Urmila Devi Shrivastav, around 65-68 years of age. Housewife who has –for some time in life, ran tuitions for small children.

3. **Deeksha** Verma- around 22-25 years of age. Very helpful, cooperative and lovely girl. Daughter of Rajendra Prasad's real brother who stays away in a smaller town. She has been staying with these people for some time to complete her final year of Law and prepare for her UPSC exams.

4. **Sanjay** Shrivastav- around 35-40 years of age. Son of Rajendra Prasad and Urmila Devi. An engineer who did his PG in the US and is now serving there and is a US citizen.

5. **Barbara** Shrivastav (originally Barbara Regina) around 35-40 years of age. Wife of Sanjay Shrivastav. Originally Mexican but now a US citizen. A teacher in a local school where they live in the US.

6. **Tarun** Angel Shrivastav, son of Sanjay and Barbara, of around 15 years of age. An intelligent lad who is not familiar with India or Indian ways and finds himself confused. Understands very little Hindi but Cannot speak the language.

DO NOT COPY

Homecoming

Music.

Credits.

When curtains open we see Amma doing a lot of arrangements in all rooms- seen and not seen rooms of the house. Organizing things, instructing Deeksha to do things correctly. Moving from one room to the other, changing sheets, covers, pitting things properly etc. During all this she straightens her back, stretches and so on-as if she is tired but does not stop.

अम्मा : वो गिलाफ लाना इधर ,,

दीक्षा : ये वाले?

अम्मा : वो जो कल धुले थे,,

दीक्षा : अच्छा ! वो जो कल धुले थे ! (ढूंढती है) रखे कहाँ हैं वो ?

अम्मा : (खुद ढूंढने जाती है)..रखे कहाँ हैं वो ?,,,ये देख,,,,,,तम्ही ने तो रखे थे,,,,सब भूल जाते हो,,

दीक्षा : मैं ने तो सिर्फ धोये थे, रखे तो आपने थे चाची,,

अम्मा :अब इधर आओ,,ये पलंग उधर से खिसकाओ ज़रा ,,,मेरी तो कमर सुसरी ऐसा पिराती है की क्या बताएं,,

दीक्षा : तो काहे किये जा रही हो ये सब,,,वो आएंगे तो कर लेंगे अपनी पसंद के हिसाब से. जहाँ सोना हो सोयेंगे. क्या पता उन्हें सोने का समय ही न मिले,,,बातों बातों में समय निकल जाये,,,चार साल बाद तो आ रहे हैं.

अम्मा : कोई सोयेगा ही नहीं ! ये क्या बात की !

DO NOT COPY

दीक्षा : क्या बात की ! अरे चाची विलायत वाले रात रात भर काम करते हैं और देखते नहीं हो,,,,दिन में कहीं मौक़ा मिल जाये तो कहो गाडियाई में सो लें,,,उनको ज़्यदा नींद की ज़रुरत नहीं पड़ती,,,ठंडा देश है न !

अम्मा : (ताज्जुब से) अच्छा ! और तुम जो ठण्ड में रज़ाई में दिन भर सोती रहती हो सो ?

दीक्षा : अरे हमारे यहाँ तो ठण्ड पड़ती है ,,हम ठन्डे देश थोड़े ही हैं .

अम्मा : (बिस्तर बनाते हुए) चलो उधर से खींचो चद्दर,,,हाँ,,,ऐसे,,,,,,,,तीन घंटे हो गए तुम्हारे चाचा दही लेने गए हैं कि जमाने गए हैं,,क्या जाने,,,

दीक्षा : अरे चाची,,,जायेंगे कहाँ,,,एक आध सिगरेट पी लेंगे और क्या.

अम्मा : घर में न पियें ,,मार बदबू भर जाती है,,,फिर न जाने बहु क्या कहे.

दीक्षा : बहू न बोलो,,,,डॉटर इन लॉ कहो,,,,बहू कहोगी तो वो समझ ही न पाए,,,

अम्मा : (गोपनीय तौर से) अच्छा तुम ने तो उसकी फोटो फेसबुक में देखी है,,,,कैसी है ?

दीक्षा : कैसी है मतलब ?,,तुमने नहीं देखी है क्या,,,शादद्दी तो तुम ही ने करवाई थी,,,,,अच्छी खासी है. संजय भैय्या से थोड़ी लम्बी है.

अम्मा : थोड़ी तगड़ी भी है.

दीक्षा : अब खाई पी है,,,वहां कोई थोड़ी मैथी और रोटी खा के सो जाता है,,,,,पूरा खाना खाते हैं.

अम्मा : तुम तो जब से हॉस्टल गयीं राक्षस हो गयीं,,,खाने की चीज़ हो न खाने की हो सब खाने लगीं ,,,मैथी रोटी में वो गुण हैं कि आदमी की सेहत एकदम चोखी रहती है.

दीक्षा : कहने की बात है चाची,,जब कमज़ोरी आती है तो डाक्टर भी अंडा तो खाने को कहते ही हैं.

अम्मा : फल भी खाने को कहते हैं,,,,,तुम शुरू मत हो जाना खाने पीने को ले कर,,,(सोचते हुए) वैसे अब खाने लगा हो तो खाने लगा हो वरना बड़ा तो संजय इसी घर में हुआ है,,,और हम लोग तो पक्के शाकाहारी रहे हैं...जब यहाँ से गया तब तक तो था.

दीक्षा : तब संजय भैय्या के जीवन में बारबरा नहीं आयी थी चाची !

DO NOT COPY

अम्मा (दांत भींचते हुए) जाने कहाँ से पकड़ लाया उसे ये लड़का.

दीक्षा : तुम्ही ने तो करवाई थी शादी,,,कितना नाचीं थी तुम...

अम्मा : (सब काम छोड़ कर,खड़े हो कर) अब क्या करूँ ,,इकलौता लड़का है,,उसने पसंद कर ली,शादी करना चाहता है तो क्या करूँ ...करो भाई आपने मन की,,,हम भी नाच लिए,

दीक्षा : (काम बंद करके)अच्छा चाची,,,पलंग की चद्दर तो बदल लिए लेकिन इनपे अगर वो सोयेंगे तो लड़का कहाँ सोयेगा?

अम्मा : लड़का उस कमरे में सो जायेगा.

दीक्षा : उधर पलंग छोटा है.

अम्मा : हाँआँ,,, ,,तो लड़का कौन बहुत बड़ा है .

दीक्षा और तुम चाचा और हम ?

अम्मा : बहुत ज़रूरत पड़ी तो चटाई बिछा लेंगे, गद्दा डाल लेंगे बैठक में . .

दीक्षा : अच्छा चाची,,,कितने दिन बाद आ रहे हैं भैया?

अम्मा : (गिनती करती है),,,,,,शादी करने आया था,,,,बस .

दीक्षा : अठारह उन्नीस साल हो गए ?

अम्मा : हाँ,,,,,फिर उसके बाद दो बार और आया,,,,पिछली बार ये समझो कि ,,हो गए चार साल. लेकिन बस दो दिनों के लिए,,,,,,!

दीक्षा :   और बीच में कुछ नहीं,,,,तो क्या आना क्या न आना ,,पहचानोगे ही नहीं !

अम्मा : पता नहीं क्या बात है,,,,, बीबी को भी नहीं लाया ,,,,बच्चा तो पहली बार आ रहा है,,,,कहता है लड़के को इंडिया पसंद नहीं है.

दीक्षा : देखा नहीं तो किसी को पसंद ना पसंद कैसे पता ?....लड़का तो अब १५-१६ का होगा !.

अम्मा : अरे वहां टी वी पे इंडिया के खिलाफ कुछ दिखलाया गया होगा !,,,,बहु तो आई है,समझा सकती है.

DO NOT COPY

दीक्षा : बहुएं चाची सब एक सी हैं आजकल,,चाहे गोरी हों काली हों नदी किनारे की हों समंदर पार की हों ..

अम्मा : तुमहू किसी बहू बनोगी !

दीक्षा : हम तो देसी हैं सबसे बना के रखती हैं.

अम्मा : वो जैसी भी है, बात तो फोन पे बहुत अच्छी करती है.

दीक्षा : तुम जैसे अंग्रेजी समझ ही लेती हो !,,बात में प्यार जताने में और प्यार करने में अंतर नहीं होता ?

अम्मा :तुम और मगज़ में भूसा भरो हमारे !

दीक्षा :हम तो भाई जो देखते हैं कहते हैं !

अम्मा : देखते हैं माने टी वी सीरियल ?,,,,इन फिल्म वालों ने तो जो समाज का सत्यनाश मारा है वो तो,,,,,मरेंगे सब,,,,,सबका नम्बर आएगा..

दीक्षा : अभी तो सब फल फूल रहे हैं !

अम्मा : (घडी देख कर) बोलो,,,,,चार बज गए,,,,,इतनी देर हो गयी चाचा अब तक नहीं आए.

दीक्षा : नहीं मिला होगा दही.

अम्मा : नहीं मिला तो वापस जाओ,,,लेकिन हमने शाम के लिए दही वड़े बना लिए हैं ,,,,,,,सोचा इनको आते साथ दही वड़े खिलाएंगे,,,छह बजे वो लोग आ जायेंगे ,,,चार बजा है,,,दो घंटे तो तैयार वैय्यार होने को भी चाहिए कि नहीं,,,,,चाचा भी न,,,,!

दरवाज़े की घंटी बजती है.

अम्मा : देखो,,,,आ गए.

पापा (दीक्षा के चाचा) अंदर आते हैं.

अम्मा : दही लेने गए थे कि जमाने ?

DO NOT COPY

पापा : दही तो लेने गए थे,,,फिर ख्याल आया कि वो लोग यहाँ का पानी नहीं पीते तो दही क्या खाएंगे !

अम्मा : तो दहीवड़े कैसे खाएंगे ?

पापा : अरे भाई ये शुद्ध पानी पीने वाले ,शुद्ध खाना खाने वाले लोग हैं,,,इनका पेट खराब हो गया तो दो दिन पड़ जायेंगे फिर पता नहीं इन्हें हिंदुस्तानी दवाएं भी रास आयें न आयें .

अम्मा : शुभ शुभ बोलो जी !,,, ये बताओ तुमने किया क्या ? दही लाये कि नहीं लाये ?

पापा : हम दूध वाले से लेने लगे फिर हमने कहा दही हमें सील बंद ब्रांडेड लेना चाहिए जो प्रो बायोटिक हो,प्रेज़रवेटिव फ्री हो ,अच्छी क़िस्म का हो,,,अच्छी कंपनी का हो,,,

दीक्षा : वो सब एक से हैं चाचा !

अम्मा : मिला कि नहीं ?

पापा :हाँ,,,लाये न,,,,दूध वाला दे रहा था 60 रूपए का आधा सेर ,,,ये 250 ग्राम का पैकेट मिला 80 रूपए का...

अम्मा : पाओ भर अस्सी रूपए !!

दीक्षा : मिला तो ! और चाचा अच्छा किया आप ये ले आए ,,,वरना कहीं भैय्या भाभी खाते समय नाक भौं सिकोड़ने लगते,,,

अम्मा दही ले कर किचेन में जा कर रखती हैं ,किचेन पूरा दिखाई नहीं देता लेकिन किचेन है ऐसा पता चलता है.

पापा : पता किया फ़्लाइट कितने बजे उतर रही है ?

दीक्षा : पांच पे आने का टाइम है,,इसीलिए तो कहा छः तक घर पहुंचेंगे.

पापा : डोमेस्टिक फ़्लाइट है क्या कि उतरे और चले आए हाथ हिलाते,,,,कस्टम क्लीरेंस में ही दो घंटे लग जायेंगे.,,,,हाँ तैयार वैय्यार हो जाया जाये.

अम्मा किचेन से निकलते हुए सुन लेती हैं ,रियेक्ट करती हैं.

अम्मा: तैयार का होना है,,,घर का लड़का है,,जैसे हम हैं, हैं !

DO NOT COPY

पापा : लड़का विलायती हो गया है,,, और अकेला लड़का थोड़े ही है,,,उसकी बीबी है, बच्चा है,,कम से कम प्रेसेंटेबल तो लगना चाहिए,,नहीं तो तुम खड़ी हो जाओ गन्दी संदी धोती लपेटे.

अम्मा : हम ?,,हम गन्दी संदी धोती लपेटते हैं ? तुमसे साफ़ हैं हम !,,हमारी माँ ने सिखाया है कि सुबह सुबह कपडे धो के डाल दो और स्वच्छ पानी से नहा लो फिर कुछ काम करो,,,,,तुम्हारे खानदान जैसे नहीं कि पड़े हैं बिस्तर में,,,उठे तो पान ठूंस लिए,तम्बाकू पीक दिए,,उसी पे चाय पी लिए,,,

पापा : बेकार कि बातें न करो,,,,पिताजी पान खाते थे तो वो उनकी आदत थी,,,तुमसे नहीं कहते थे कि बहू पान बना दो,,,,,,अपना पानदान,अपने पत्ते,अपनी तम्बाकू अपना कत्था चूना,,,,और तुम्हारे बाप की तरह नहीं कि जगह जगह थू थू करते फिरें,,,बराबर नाली में जा कर थूकते थे,,,,

अम्मा : अरे रहने देओ,,,हमारे यहाँ आए तो सारी दिवारें रंग गए थे !

पापा : तुम्हारे घर की दिवारें थीं ही ससुर गेरुए से पुती हुई,,,वहां कत्था क्या गैया गोभर कर दे तो न दिखे !

अम्मा : देखो हमारे मायके को,,,,

दीक्षा : (बातों को काट कर) चाची,,,चलो तैयार हो जाओ,,,,(चाचा से) चाचा आप भी चलो.

पापा : तो हम पहने तो हैं ठीक ठाक !

अम्मा : पहने तो हैं ठीक ठाक ! अरे इतने कुर्ते पड़े हैं,,लेकिन कंजूसी देखिये,,पहनेगे नहीं,,,(कटाक्ष से) मैले हो जायेंगे, इस्त्री करवाना पड़ेगी, कपड़ा खराब न हो जाये,,,अरे काय को !

दीक्षा : चाचा पहन लो कुछ अच्छा सा धुला हुआ कुरता.

अम्मा : सिल्क वाला पहनो,,,तीन तीन धरे हैं,,कब पहनोगे ?

दीक्षा : चलो हम देखते हैं फ्लाइट कब उतर रही है.

फोन ले कर उसमे देखती है.

चाचा,चाची दोनों अंदर कपडे बदलने चले जाते हैं, दिखाई नहीं देते, दीक्षा इंटरनेट चेक करती है, फिर ज़ोर से चिल्ला कर कहती है-ताकि अंदर तक सुनाई दे-

DO NOT COPY

दीक्षा : दो घन्टा लेट है चाची ,,,रूस की लड़ाई चल रही है तो घूम के आ रही है,लेट हो रहा है,,अब आठ बजे तक आएगी.

चाची बाहर आती हैं, एक साड़ी- जो वो पहनने वाली हैं- उन्होंने हाथ पर डाल रखी है .

अम्मा : दो घंटा और !!

दीक्षा : और आने के बाद कौन सीधे घर आ जायेंगे,,,,कस्टम में टाइम लगेगा,,,सो तीन घंटा वो ,,,,रात के बारह के आस पास समझो ,,,

अम्मा : बारह !,,दही वड़े का क्या होगा !

दीक्षा : ब्रेकफास्ट में खिला देना !

अम्मा : बासे ? सुबह?

पापा अंदर से बाहर आते हैं. नया सिल्क का कुरता पहनते हुए.

पापा : कहा था तला हुआ कुछ मत बनाओ,,,,उन लोगों को बहुत तैल मसाला पसंद नहीं आएगा,,लेकिन तुम तो ठहरीं देहातन,,,,समोसा,कचौड़ी,दही वडा,मंगौड़ी ,पकौड़ी,चाट,,,,,जो तुम्हें पसंद है वही तुम समझती हो सबको पसंद है.

अम्मा : तुम तो ऐसे कह रहे हो जैसे संजय ये सब खा के बड़ा नहीं हुआ है !

पापा : हुआ था,,,अब की बात करो,,,,इतने साल बाद उसे ये सब पसंद आएगा ?

अम्मा : न आये,,,,,,हमने बना दिया,,,,वो इतना तो समझ लेगा कि हमने प्यार में उसके लिए बनाया है.

दीक्षा : चाचा दो घंटे लेट है जहाज़.

पापा : दो घंटे !

दीक्षा : वो उतरेगा फिर कस्टम में टाइम लगेगा,,समझो बारह तक पहुंचेंगे यहाँ.

पापा : बारह तक !..लियो मेरा सिल्क का अच्छा खासा कुरता ख़राब करवा दिया.

DO NOT COPY

अम्मा : क्या हुआ,,,,उतार दो प्रेस करवा के रख देना, दरअसल तुम्हें उनके सामने कुरता पहनना ही नहीं चाहिए,,,बहू को लगेगा कि हम कैसे गंवार लोग हैं,,,,तुम्हें टी शर्ट और पेंट पहनना चाहिए. आजकल वही फैशन है.

पापा : अब हम उनके लिए टी शर्ट खरीदें ?!

अम्मा : तो क्या हुआ !

पापा : यहाँ से जा के एक रूपया भेजा है साहब जादे ने कभी,,,पिछली बार दो घंटे को आये थे तो एक चॉकलेट का पैकेट लाये थे,,जो न हम खाते हैं न तुम,,,बोले ये बेस्ट अमेरिकन चॉकलेट है !

दीक्षा : हाय,,,,,आज भी चॉकलेट ले आयें तो क्या मज़ा आ जाये,,,यहाँ तो कोई ढंग की चॉकलेट ही नहीं मिलती.

अम्मा : तुम तो दीवानी हो गोरों के देश की ,,,सब कुछ वहीँ अच्छा है,,,यहाँ तो कुछ है ही नहीं.

पापा : दुनिया है,,जिसके पास जो है वो उसे नहीं चाहिए,,,,वो चाहिए जो उसके पास नहीं है.

दीक्षा : अरे चाचा,,लाइफ में कन्वेनिएन्स होनी चहिये ,,यहाँ क्या है,,,,सारा जीवन सड़ो तो भी वो सुख नहीं मिलेगा जो वहां आसानी से मिल जाता है.

अम्मा : यही संजय कहा करता था,,जब आई आई टी में एडमिशन की बात चली तो बोला मै तो न्यू यॉर्क जाऊँगा ,,एक तिमाही का स्कॉलरशिप वो दे रहे हैं,,उसके बाद लाइफ बन गयी !

पापा : एक तिमाही !,,उसके बाद साल भर तक तो हम ही देते रहे,,,कमर टूट गयी,,पुश्तैनी मकान का एक पूरा हिस्सा बिक गया,,प्रोविडेंट फण्ड खत्म हो गया.

अम्मा : हमारे तो सारे ज़ेवर बिक गए.

पापा : तब जा के पढाई पूरी हुई.

दीक्षा : नौकरी तो मिल गयी.

पापा : मिल गयी,,नौकरी भी मिल गयी और बीबी भी मिल गई !

दीक्षा : काहे की नाराज़गी है चाचा,,,,,इतने साल हो गए,,,,और शादी भी आपने ही करवाई,,,तो काहे मलाल भरे बैठे हो.

DO NOT COPY

पापा : क्या क्या अरमान साधें थे,,वो बगल वाले सिन्हा साहेब की लड़की थी,,कित्ता अच्छा ख़ानदान था,,,,लड़की भी कितनी सुशिल थी,,,एम् ऐस सी थी !,,,शादी करके चाहे अमरीका ही चले जाते,,लेकिन इत्मीनान रहता कि अच्छे खानदान की बहू आयी ,,अच्छी रिश्तेदारी होती...

दीक्षा : तो बारबरा क्या खराब खानदान की है?

अम्मा : मैक्सिकन है.

दीक्षा : तो ? मैक्सिकन खराब होते हैं?

अम्मा : हम क्या जाने,,क्या पता नहाते वहाते हैं कि नहीं,,,,सुनते हैं विलायत वाले तो टॉयलेट के बाद भी हाथ नहीं धोते,,!

दीक्षा : छिः !

पापा : अब हाथ धोये न धोये ,,नहाये न नहाये ,,तुम तो दो दिन को मिलोगी,,,वो चले जाएँ तो छिड़क लेना गंगा जल अपने घर मै.

अम्मा : (ऑखें बंद कर के हाथ जोड़ती है) अब कहाँ कहाँ गंगा जल छिड़कें,,पहले तो अपने लड़के संजय पर छिड़कें !

पापा : (सलाह करते हुए) अच्छा,,पूजा करवा लें ?,,,,घंटे दो घंटे का काम है,,पंडित जी बुला लेंगे,,बारबरा और संजय दोनों को बैठा देंगे,,,,सब शुद्धिकरण हो जायेगा.

अम्मा ; आईडिया तो अच्छा है .

दीक्षा : वो माने तब न !,,,,,फोन पे पूछ लेते तो पहले से इंतज़ाम कर लेते.

पापा : क्या पूछ लेते ,,हेलो, हाय !,,,,अरे यू हैप्पी ?,,,आल वेल ?,,,वी आर ओके !,,,,,महीना पंद्रह दिन में ऐसे SMS आ जाते हैं,,,बात भी एकदम नपीतुली,,वो भी उनकी रात हमारा दिन सो रात में जागो बात करने के लिए ,,तो क्या कोई कुछ पूछे और क्या बताये !

दीक्षा : तो जब बताने को कुछ है ही नहीं तो कोई क्या बताये ! और आप से पूछो कैसे हो तो चाचा बोलेंगे ठीक है,सब चल रहा है ! चाची से पूछो तो वो बोलेंगीं इत्ते साल हो गए एक और बच्चा नहीं करोगे ?,,,बताओ ! क्या करें संजय भैय्या !,,,, आपने उन्हें अपने कैटरेक्ट तक के बारे में तो बताया नहीं की वो परेशान होंगे !

DO NOT COPY

अम्मा : हाँ तो,,,,, अपनी परेशानी बता के उन्हें क्यों परेशान करना.

दीक्षा : आपस में तो भाई आपस की बात होती है.

पापा : तू अपने बाप पे गयी है.

अम्मा : इसका बाप तुम्हार सागा भाई है !

पापा : तभी तो जानता हूँ.

दीक्षा : मेरे पिताजी ने अब क्या कर दिया ?

पापा : अरे वो हर बात में बाल की खाल निकालेगा,,,,और खाल निकाल के उसमें भुस भी भर देगा !

दीक्षा : लेयो,,,, किस बात में भुस भर दिया ?,,,,,ठीक ही तो कह रही हूँ जब आप बोलोगे सब ठीक है,चल रहा है तो कोई कितनी बार पूछेगा हाल चाल,,,आप जवाबय नहीं देंगे,,, सीधे बच्चेपैदा करने पे आ जाएँगी,,,,

अम्मा : एक लड़का हुआ,बस !

पापा : तुम्हारे भी तो एक लड़का हुआ था.

अम्मा : हमारे एक लड़का हुआ तो तीन लड़कियां भी हुईं.

पापा : तुम तो हो ही उस खानदान की जो लड़कियां ही लड़कियां जाती है,,,तुम भी तो चार बहने थीं !

अम्म : देखो !,,, हर बात में मेरे खानदान पे न जाना,,,,तुम अपने बब्बा की नहीं कहते जो एक जोरू के रहते दूसरी कर ले आये थे और अगर तुम्हारे पिताजी न रोकते तो तीसरी भी ले आते.

पापा : वो तो एक में बच्चा नहीं हो रहा था इसलिए दूसरी लाये थे,,,,लेकिन बाद में उसके हो गया तो दोनों रह गयीं ! उसमें क्या गलत हुआ ?

अम्मा : अपनी बात हो तो कुछ गलत नहीं,,,दूसरे की हो तो सब गलत ही गलत,,,,,,तुम मर्द लोग बड़े शातिर हो,,,,पीना खुद को है लेकिन ढोंग ये कि शिव जी को प्रसाद चढ़ा के पिएंगे.

पापा : श्रद्धा है अपनी अपनी.

DO NOT COPY

अम्मा : थोड़ा ज़हर भी पी के देखो,,,कंठ में धर लेना.

पापा : तुम कम ज़हर हो जो हम कंठ में धारण किये हैं.

दीक्षा : (किसी की बात पर ध्यान न देते हुए) चाची ,,,फिर देखें क्या कि फ्लाइट उतरने में कित्ती देर है ?

अम्मा : देखो देखो...हमारे दही वड़े तो खराब हो जायेंगे,,,,,,फ्रिज में रख दें क्या ?

दीक्षा : और क्या,,,दही वड़े तो लोग ठन्डे ही खाते हैं एकदम चिल्ड ,,,दही,चटनी,चाट मसाला और ज़रा सी ऊपर से भुरकी हुई लाल मिर्च !

(चटखारे लेती है)

अम्मा :पूछो पूछो हवाई अड्डे से,,,,,पता करो.

पापा : अच्छा वो जहाज़ से उतर भी गए तो यहाँ आएंगे कैसे,,हम तो रहते हैं हवाई अड्डे से इतनी दूर,,,,,उनके लिए तो ये गाँव ही हुआ न .

अम्मा : गाँव हुआ ?,,,,यहाँ पले बढे हैं,,,दो दिन वहां क्या रह लिए ये गांव हो गया ?

पाप मेरा मतलब वो नहीं था,,

अम्मा : तो क्या था ?

पापा : हमने कहा दिल्ली एयरपोर्ट यहाँ से बहुत दूर है हम लोगों को क्या उनके लिए टैक्सी वैक्सी का इंतज़ाम नहीं करना चाहिए ?

दीक्षा : टैक्सी तो एयरपोर्ट से भी मिल जाएगी चाचा.

पापा : वहां से सारी टैक्सियां शायद यहाँ न आएं,,,,यहाँ प्राइवेट टैक्सी ही आती हैं..ओला ,उबेर प्ल्यूबेर नहीं आतीं.

अम्मा : (सोच कर) तो क्या हम यहाँ से बुक कर दें? यहाँ से जाने का और वहां से आने का दोनों का भाड़ा लगेगा .

पापा : लेयो ,,ये और चपत लगी,,,,,

DO NOT COPY

दीक्षा : आप बेकार परेशान न हों चाचा ,,,वो कोई अजनबी हैं यहाँ के लिए ? दुनिया घूमते हैं,,,,वो सब इंतज़ाम कर लेंगे.

अम्मा : (चहक कर) अच्छा एयरपोर्ट चले चलें उन्हें लेने ?,,क्या सरप्राइज़ लगेगा उनको !

दीक्षा : हाँ हाँ,,,अच्छा आईडिया है,,लेकिन अपने को जाने जाने में तीन घंटे के क़रीब लगेंगे,,,,टैक्सी से गए तो बात अलग है.

अम्मा : टैक्सी से ही जायेंगे.

पापा : तो फिर वो ही बात हो गई,,,,,जाने और आने दोनों का खर्च,,,

दीक्षा : (फोन में देखती है) लेकिन ना !,,,ऐसा न हो कि हम वहां जाएँ और वो यहाँ आ जाएँ.

अम्मा : थकावट और हो जाएगी.

पापा : छोडो, यहीं बैठो.

अम्मा : मेरे दही वड़े !,, बेटा दीक्षा ,,फ्रिज में रख दे दही भी और वड़े भी.

दीक्षा : अब क्या फ्रिज में रखना चाची,,,फ्लाइट तो उतरने वाली होगी.

पापा : फ्लाइट उतरते तक दही सड़ गया तो ?,,,पैसे भी गए और दही वड़े भी बेकार हो गए.

दीक्षा : चलो रख देते हैं,,*(अंदर जा कर बोलती है)* चाची !,,,फ्रिज तो भरा पड़ा है,,,दही क्या कुछ भी रखने की जगह ही नहीं है. इतना कुछ तो बनाया है तुमने उनके प्यार में.

अम्मा : अरे क्या बनाया है,,,,चल रहने दे,,,,आजा.

पापा : तुम लोग तैयार नहीं होओगे.

अम्मा : तुम जो बीच बीच में इधर उधर करने लगते हो,,,खानदान निकालने लगते हो,,,,इसी में रह गए नहीं तो हम तो साड़ी निकाल चुके थे तैयार होने जा रहे थे.

पापा : हर काम तुम्हारा बस हमारे कारण रुक जाता है.

दीक्षा : बात तो ठीक है चाचा,,,चाची कुछ भी करने जायें आप रोक देते हो,,,,मतलब रोक नहीं देते कुछ ऐसा कर देते हो जिससे सब काम रुक जाता है .

DO NOT COPY

पापा : तो अब जाओ तुम लोग तैयार हो,,,,(उदास से होते हुए, जैसे अपने आप से) हमारा कुरता सत्यानाश करवा दिया.

Both the ladies go in.

Papa sits in the room for a while and then he also walks away to another room and then to the balconey looking outsie.

Lights go off. Music takes over,

A little time lapse.

When the lights come up Papa is gradually walking back into the room looking at his wrist watch, He sits on a chair picks up newspaper,seems un-interested, keeps in back.Amma and Deeksha -one by one - walk into the room in different presentable attires.

अम्मा : (पापा से) क्या जाने क्या टाइम हुआ होगा !

पापा : टाइम को छोडो ,,,टाइम का क्या भरोसा,,,हवाई यात्रा है कभी प्लेन दो मिनट जल्दी भी आ जाये और कहो दो घंटे लेट हो जाये.

दीक्षा : ऐसा कैसे चाचा,,,हवाई जहाज़ टाइम से उड़ता उतरता है.

पापा : बेटा दिल्ली है,,,यहाँ कोई छुटभैय्या नेता भी हवाई जहाज़ को हवा में चक्कर लगवा सकता है,,,,वी आई पी मूवमेंट के नाम पर घंटों घंटों प्लेन नहीं उतरने देते.

टेलीफोन की घंटी बजती है.

दीक्षा फोन उठाती है.

दीक्षा : हेलो,,,, यस यस,,,,,(*excited हो कर*) अरे भैय्या *!,,,(माउथ पीस पर हाथ रख कर चाची से)* संजय भैय्या !

अम्मा : आ गया,,,,!

DO NOT COPY

दीक्षा : *(फोन पर)*,,,हाँ हाँ,,,,*(excitement ख़त्म हो जाता है)*,,,आई सी,,अच्छा,,,,ठहरिये मै अम्मा को देती हूँ.

अम्मा : *(फोन पर)* हाँ बेटा,,,अरे देर हो गयी तो क्या हुआ,,,,,थक गए हो ?,,,तो घर है यहाँ आ कर सो जाना,,,,तुम्हारे आराम का सब बंदोबस्त हम कर देंगे.....अरे,,,अच्छा,,,,जैसा समझो भाई,,,,ओके ,,,,ओके,*(फोन बंद कर के सबसे)* आ तो गए हैं.

पापा : फ्लाइट जल्दी आ गयी ?

अम्मा : नहीं वो उस फ्लाइट से नहीं आए जिससे तय हुआ था,,,उससे पहले वाली से आ गए,,,

पापा : तो फिर?

अम्मा : उतर तो गए लेकिन कहते हैं थक गए हैं,

पापा : हाँ,,,तो ,,,14-18 घंटे की फ्लाइट है थक तो गए होंगे.

अम्मा : कहते हैं एयरपोर्ट से घर पहुँचते पहुँचते 12- 1 बज जायेगा,,,आपको इतनी रात असुविधा होगी,,और थक भी बहुत गए हैं,,इसलिए आज रात पास ही होटल में रुक जाते हैं सुबह आएंगे.

पापा : क्या बेवकूफी है !

दीक्षा : फोन पर पहले ही पूछते थे तुम लोगों को डिस्टर्ब तो नहीं किया. ,,,लियो हम तो उन के इंतज़ार में बैठे हैं.

पपा : अब समझीं तुम,,,,,बाहर रहने से बाहर के तौर तरीके भी आ जाते हैं.....जिस समाज में रहोगे,जो खाओ पियोगे वही बनोगे.

अम्मा : (पापा की बात नहीं सुनी) ,,,तो अब ये लोग कल आएंगे !

दीक्षा :कल कौन सा सुबह दस बजे आ जायेंगे....थके हैं,सुबह आठ दस तक सो के उठेंगे ,फिर नाश्ता करेंगे,नहाएंगे धोयेंगे,,,,यहाँ आते आते तो वो ही डेढ़दो बजेंगे.

अम्मा : (मन मार कर) चलो,,,क्या किया जा सकता है,,,

पापा : बारबरा ने कहा होगा कहाँ जाओगे उस छोटे से मकान में,,,पहुँचते रात हो जाएगी,उनको डिस्टर्ब होगा,,होटल में रुक जाओ एक दिन,,,रिलैक्स करकेजाएंगे,,मिलना हो तो है.

DO NOT COPY

अम्मा : चलो एक दिन बाद सही,,,आएगा तो फिर दस दिन तो रहेगा.

पापा :ऐसा कहा है क्या?

अम्मा : बोल है दस दिनों के लिए आ रहे हैं.

दीक्षा : बड़ा मज़ा आएगा चाची,,,,

अम्मा : हमें तो संजय के लड़के को देखना है,,,क्या नाम है उसका....

दीक्षा : तरुण एंजेल !

पापा : क्या बेवकूफी है,,,तरुण एंजेल !,,,ये भी कोई नाम हुआ ?

दीक्षा: तरुण एंजेल श्रीवास्तव !

पापा : बताइये ! हमने अपने बेटे का नाम रखा संजय श्रीवास्तव तो उसके बेटे का नाम तरुण श्रीवस्तव नही हो सकता था ?

अम्मा : तो यहाँ ज्ञान बघार रहे हो,,उनसे पूछा काहे नहीं कि क्यों रखा ऐसा नाम,,,,आधा

अंग्रेजी आधा देसी ?

पापा : पूछा था ,,,पूछा था,,,बोले अपने बेटे का नाम हम आपसे पूछ के राख्नेगे क्या ! बताइये ! याने हम उसके कोई हाइएं नहीं ! उनका लड़का हमारा कुछ नहीं !

अम्मा : तुम सीधी तरह किसी से न कुछ कहते हो न पूछते हो इसलिए तुम्हें जवाबभी ऐसे ही मिलते हैं.

दीक्षा: (अपने ही विचार, में चीज़े देखते हुए) अच्छा चाची,,,ये जो नई नई चद्दरें बिछा ली हैं,,,इनपे सो गए हम लोग तो कल उनके आने पर मुसी मुसी लगेंगी,,इन्हें हटा लें ?

अम्मा : हाँ ये भी एक बात है,,,,बताओ,,पहले बिछाओ फिर हटाओ,,,

पापा : चद्दर हटाते रहना ये बताओ कि दही वड़े का क्या करोगे?

अम्मा : क्या करोगे माने ?

पा : कल तक तोख़राब हो जायेंगे.

अम्मा : काहे ? खराब काहे हो जायेंगे ?

पापा :नहीं,,,वो बात तो नहीं रहेगी न जो आज है !

दीक्षा : अरे चाची,,,,चाचा का दिल कर रहा है दही वड़े खाने का !

पापा : जीते रह बेटा,,,,,दीक्षा बेटी तू ही एक है जो मेरे मन की बात समझ लेती है.

अम्मा : अरे कल खाने के वक़्त तक आएंगे तो खाने में दही वड़े खिला देंगे.

पापा : (मन मार के)खाने में खिला देना,,,,एक आध चख लेते तो देख लेते कैसे बने हैं.

अम्मा : कैसे बने हैं ? पहली बार बनाये हैं क्या हमने दही वड़े?संजय जब छोटा था तब से उसे मेरे हाथ के दही वड़े पसंद हैं.

पापा : जब छोटा था तब हम भी उसके लिए कितना बादाम काली मिर्च पीस के पिलाते थे. क्या पता वो अपने लड़के को बदाम देता है या नहीं.

अम्मा : हं हं हं हं ,,,,,तुम पीसते थे और वो बादाम पीने से नाक सिकोड़ता रहता था.

पापा : सिकोड़ता रहा होगा,,,लेकिन आज जो बुद्धिमत्ता उसमें है वो बचपन में बादाम पीने से ही तो है.,,,सुबह बादाम रात में कॉड लिवर आयल ,,,जीवन भर मग़ज़ और हड्डियां मज़बूत.

अम्मा : मग़ज़ तो मज़बूत हो गया,,लेकिन हड्डियां मज़बूत भी हो गयीं और हड्डियां निकल भी आयीं.

पापा : तुमभी तो सुबह सुबह पांच बजे उठ के उसके लिए गर्म परांठे सब्ज़ी का डिब्बा बाँध देती थीं.

अम्मा : सात का स्कूल था,,साढ़े छह बजे तुम भी तो साईकिल पे छोड़ने जाते थे.

पापा : पांचवें से सातवें तक तो गए,,फिर हम नहीं गए,,,बड़े हो गए थे ,,,

दीक्षा : चाचा आपने संजय भैय्या के लिए जो किया वो बचपन की बात है,,,,,,अब तक याद रहेगी?

पापा :न रहे उन्हें याद ,,,,हमें तो याद है,,,,और उन्हें कुछ कुछ याद तो होगी ही.

शिक्षा : नौकरी तो चाचा और चाची आप दोनों ही करते रहे.

DO NOT COPY

अम्मा : नौकरी ये करते रहे,,हम तो ट्यूशन पढाते थे.

पापा : अच्छा अब ये सब छोडो,तुम तो ये बताओ दही वड़े चखा रही हो या बातों में उलझा के चला रही हो.

अम्मा : लियो ,,,,,तुम तोएक बात पे अड़ जाओ तो अड़ ही जाओ.

दीक्षा : रात को खाने के साथ चख लेना चाचा.

पापा : तो अब इत्ती रात तो होने आयी.

अम्मा : मेरी बात सुनो,,,,दीक्षा ठीक कहती है,,,,हमें ये नई बिछाई चद्दरें वापस रख देनी चाहिए ,,,,इनको सो के खराब नहीं करना चाहिए,,,और अपने कपडे भी बदल लेना चाहिए.

दीक्षा : हाँ चाची,ठीक बात है.

पपा : बात तो ठीक है,,मेरा तो अच्छा खासा कुरता सत्यनाश करवा दिया.

अम्मा : सत्यानाश काहे का ,,,,अच्छा खासा तो है,,,हैंगर पे टांग दो कल पहन लेना.,,,,,,बेटा दीक्षा तू भी कपडे बदल ले.

पापा : कुछ बोला है संजय ने कि किस होटल में ठहरे हैं.

अम्मा :कोई हिल्टॉन विल्टॉन जैसा नाम लियाथा,,,

पापा : हिल्टॉन ! अरे बाप रे !,,इतना महंगा होटल !

दीक्षा :तो क्या भाभी और बच्चे के साथ वो सीताराम गेस्ट हाउस में ठहरेंगे !

अम्मा : बहुत महंगा होटल है ?

पापा : सबसे महंगा होगा हिल्टॉन तो .

दीक्षा :वो डॉलर में कमाते हैं,,तुम्हारा एक रूपया और उनके नव्वे ,,तो क्या वे अपने आराम के लिए इतना भी न करें.

पापा : अरे भाई खर्चा करो लेकिन कुछ आगे को भी सोचो.

दीक्षा : अपनी वो सोचेंगे,,,,आप उनके लिए काहे सोच रहे हो.

DO NOT COPY

पापा : चलो तुम जाओ चद्दरें बदलो,,,हम भी कुरता तहा के रख दें,,कल देखी जाएगी.

अम्मा : पड़ी रहने दो,,कल फिर कौन बिछाता फिरेगा,,,,,रात की ही तो बात है,,,हम लोग उस कमरे में सो जायेंगे.

They all et busy with thier ast minute organising/checkin etc..

The lihts go off. In the dark the music takes over.

Following sound track plays on the Black .

Following converstion mixed with the atmospheric sounds.

संजय : बस यहीं,,,,,यहीं रोकना.

तरुण : Dad !,,,Look,,,,,Cow !

बारबरा : Honey ! I can't get out of ther taxi rom here,,its too narrow here.

संजय :गाडी ज़रा आगे ले लो भैय्या.

तरुण :Isn't it a little dirty to get out?

संजय : चलो भाई सामान निकालें,,,

Car doors/ Dickey open and close.

बारबरा : Oh ! The stairs !

तरुण : careful Mom !

Pleasant music continues which cross fades to a mellow music of Shahnai mixed with nearby noise of drums etc.

When lights come up we see Sanjay, Barbara with Tarun behind them standing at the main door of the house and Amma holding a Thali and doing Pooja of Barbara and Sanjay. Tarun feels a little awkward. Barbara likes the Tika on her forehead.

बारबरा : Oh, the Tika,,,I love it.

Sanjy coms forward and touches feet of his monther and fther. Barbara just bows and hugs them.

DO NOT COPY

अम्मा : जुग जुग जियो बेटा .

पापा :खुश रहो,,खुश रहो..

Mother introduces Diksha to Barbara and Sanjay.

अम्मा :इसे पहचाना ?,,,,,दीक्षा !,,कितनी बड़ी हो गयी न...!

संजय : अरे !,,,,,,,मेरी छोटी बहन,,,How are you ?

Barbara says Hello to Diksha, Tarun is a bit lost.

संजय : Tarun,,,Have you touched their feet?

Tarun does that as a formality/reluctantly.

तरुण : Why do we touch feet,,,why not head or hand or,,,

संजय : To get the blessings.

तरुण : bleassings are in the feet ?

बारबरा : Angel,,,Sweetheart,,,thats Indian tradition.

तरुण : Oh !

बारबरा : (enters the house, looks around) Amma you keep your house very organised.

Amma looks at Sanjay as she cannot understand Barbara.

संजय : वो कह रही है आप घर बहुत अच्छी तरह रखती हैं.

तरुण : Ya,,,Amma,,,you should look at the mess in our house...

संजय : She is not u Amma,,she is your Dadi,

तरुण : OK,,Dadi,,,we have a big house but Mom has stacked it with so many unwanted things,,,

अम्मा : (खुश हो कर) घर अच्छा लगा...हं हं हं हं...

DO NOT COPY

बारबरा : (सोच सोच कर बोलती है)आपका घर बाउट अच्छा है...

संजय : (ठीक करता है) आपने घर बहुत अच्छा रखा है,

बारबरा : Yes,,,,,,अच्छा रखा है ,

दीक्षा : Chachi has worked really hard to see that your stay here is comfortable.

पापा : अरे जाने क्या क्या तो बनाया है तुम्हारे लिए...कपडे वपड़े बदलोगे या अब नाश्ता लगाया जाये .

संजय : नाश्ता तो पापा हम लोग करके ही आये हैं,,

अम्मा : अरे ,,,ऐसे कैसे,,,,हम नाश्ता करने बैठे हैं तुम्हारे इंतज़ार में,,,

संजय : अम्मा रात बहुत देर से सोये थे,,,सुबह भी देर से उठे तो सोचा नहा धो के नाश्ता करके निकलें,,,

अम्मा : हमने तो तुम्हारे पसंद के गोभी और मूली के परांठे बनाये हैं,,,

संजय : परांठे तो हम लोग वैसे भीआजकल नहीं खाते,,,इतना तेल मसाला तो बंद कर दिया.

बारबरा : पराठे नहीं,,अम्मा,,,,खाते नई,,

दीक्षा : चाची ने आपके लिए दही वड़े बनाये हैं

पापा : हाँ,,,,दही वड़े तो तुम्हें बहुत पसंद हैं ,,वो तो खा के देखो...

संजय : दही,,,,(बारबरा की ऑर देखता है),,Is that OK ?

बारबरा : Be careful with water.

तरुण : Ya,,,I have bought two bottles of mineral water.

अम्मा : लड़का हिंदी नहीं जानता ?

संजय : नहीं अम्मा ये हिंदी नहीं जानता,,,,,वहां हिंदी सीखने का मौक़ा ही नहीं मिला उसे...

पापा : तुम तो सिखा सकते थे,,,

संजय : हाँ ,,लेकिन न इतनी फुर्सत मिली न मौक़ा मिला और काम तो चल ही जाता था....इसलिए,,,

पापा : फुर्सत नहीं मिली ?

संजय : सुबह पांच बजे उठते हैं,,,,आठ का ऑफिस है,,,दो घंटे कम्यूट करने में लगते हैं,,,,छह बजे चले जाते हैं,रात को आठ तक वापस आते हैं,,सैटरडे संडे मिलता है सो चले जाते हैं घूमने,या खेलने....फिर घर के काम भी होते हैं,,,

अम्मा : चलो चाय तो पी लो,,,दीक्षा चाय बना ले,,,

बारबरा : कॉफ़ी,,,हम कॉफ़ी पिएंगे,,,

पापा : कॉफ़ी,,,,(अम्मा से) कॉफी है ?

दीक्षा : मैं ले आती हूँ.

संजय : नहीं है तो छोडो,,,मेरे लिए चाय बना लो.

पापा : इन दोनों को ?

बारबरा : इनको गोली मारो !,,हा हा हा हा ...

अम्मा : ये क्या बात हुई ?

संजय : मज़ाक़ कर रही है अम्मा !,,,अमेरिका में गन कल्चर बहुत है ,,जहाँ देखो वहां लोग बंदूक से लोगों को मार डालते थें,,,इसलिए जब हम लोग किसी चीज़ को नहीं चाहते तो कहते हैं गोली मारो...

पापा : ये तो हिंदुस्तान में नेता लोग कहते हैं,,,,,गोली मारो सालों को,,,हं हं हं

संजय : यहीं से तो सीखा है,,,हम भी तो यहाँ का टी वी देखते हैं,,,बात चीत में वही भाव अडॉप्ट कर लेते हैं,,,यहाँ भी वहां भी ,,,

पापा : बैठो बैठो,,आराम से बैठ जाओ !,,,अच्छा चाय नहीं तो इनदोनो को छाछ पिला दो.

बारबरा : हम बैठते हैं ,,,,Tarun Angel ,,,,sit here,,,, छाछ ? what is छाछ ?

अम्मा : छाछ ,,संजय तू बता.

संजय :वहां छाछ होती ही नहीं और घर में बनाते नहीं.

They all who were so far scattered and looking around etc. sit at one place and make themselves comfortable, Diksha goes inside and comes back with a trey full of cold drinks,two tea cups nd some eateries, keeps that on the table. trun take a piece of sweet and enjoys.

बारबरा : (to taun) Not too much sweet Angle...

तरुण : umm,,,,Its good !

They all have something and chit chat.

पापा :सफर ठीक था ?

बारबरा : A bit tiring Papa.

Music takes over, They all chatter, tease each other etc, Humour each other , Good homely atmosphere of happy family reunion. They eat some, fool around. Barbara and Tarun are a little formal. Diksha enjoys, Amma serves which no one wants, Papa observes and enjoys. The chatter under this pleasant music is heard but not clearly understandable.

Amma's phone rings, The music cross-fades with this. Amma speaks.

अम्मा : हाँ बेटा ,,,,आ गया,,,बात करो ...(संजय को फ़ोन देती है)तुम्हारा दोस्त राघव.

संजय : (ताज्जुब से),,,,राघव !,,,,वो अभी तक है ?....(फोन ले कर) हाई राघव !,,या या,,,,अभी आया,,,मिलना ?,,,नहीं हो पायेगा,,,We re here or a ery short time,,,ou all well?,,,yay a ,,,,,good to speak to you. Bye...! (फोन अम्मा को वापस करते हुए) ये आपके टच में है ?

अम्मा : पूछता रहता है तुम्हारे बारे में .

दीक्षा : (लड्डू की प्लेट उठा कर.) भाभी ,,ये चखो,,ये गोंद के लड्डू हैं ख़ास तुम्हारे लिए बने हैं.इसमें शकर भी कम है और ये यु पी की स्पेशलिटी है.

बारबरा :Thank you but no thank you,,I had enough ,,,, बहोत हो गया .

पापा : चलो थक गए होंगे तुम लोग आराम करो.

DO NOT COPY

बारबरा : आराम नहीं,,,,हम शॉपिंग जाना चाते हैं Don't we Baby ?,,,,जनपथ जायेंगे,पालिका बाजार जायेंगे,,,,

संजय : Of course Baby ! (अम्मा से) इनको छोले भठूरे खाना है

अम्मा : यहाँ तुम परांठे नहीं खा रहे और जाओगे छोले भठूरे खाने?

बारबरा : वो स्पेशलिटी है यहाँ की,,,,,तरुण एंजेल खाना चाहता है,,,

पापा : वो तो अमरीका में भी मिलता है.

संजय : हाँ आ,,बट दिल्ली का भटूरा इज़ दिल्ली का भटूरा ,,,हं हं हं ,,,

पापा : तब यहाँ का पानी ठीक रहेगा ?

बारबरा : Oh that's all boiled water Papa !

पापा : चलो अपना सामान तो रख लो ठीक से,,और कपडे बदल लो फिर खाने का सोचा जाये क्या खाओगे,,,,अब आज ही तो आये, आराम करो खाओ पियो कल चले जाना कनॉट प्लेस....जल्दी क्या है,,,

अम्मा : फ़्राईड ही खाना है तो तुम्हारे लिए पकौडियें बना दें,,?

पापा :इनको वो ऋषिकेश वाली उरद की वड़ी बना कर खिलाओ,,,

बारबरा : Nothing Papa,,,,we are full !

दीक्षा :आपका सामान वहां रख देते हैं,,,,,,,,आराम कर लीजिये.

संजय : आराम नहीं हम जा के आते हैं.

अम्मा : अभी तो आए हो,,दस दिन हैं कल चले जाना.

संजय : दस दिन के लिए तो आए हैं,,

अम्मा :वही तो कहा.

संजय : उस दस दिन में हमें राजस्थान भी घूमना है,,जयपुर जोधपुर जैसल्मेर, रण ऑफ़ कच्छ ,,

DO NOT COPY

पापा : इतना सब कैसे एक साथ,,,?

बारबरा : It's all booked Papa,,,Travel Agent से किया है.

अम्मा : आने से पहले?

संजय : वहीँ से सब हो जाता है अम्मा .

दीक्षा : कितने दिन का टूर है ?

संजय : छह दिन का टूर है,,,दो आने जाने के हो गए,,दो दिन यहाँ आपके पास रुकेंगे.

बारबरा: उसमें एक दिन कल का तो गया.

अम्मा : दो दिन बस !,,इतने साल बाद आए और दो दिन !

संजय : क्या करूँ अम्मा,,,छुट्टे ही नहीं मिलती.

अम्मा : दुनिया में सबको छुट्टी मिलती है,,तुम्हें छुट्टी नहीं मिलती !

संजय : और पैसा कितना लगता है अम्मा !

पापा : तो भाई कमाते भी तो हो,,,,यहाँ के मुक़ाबले तो तुम्हारा एक रूपया 90 रूपए का है.

संजय : खर्चा भी उसी हिसाब से है पापा,,,अभी बारबरा के जबड़े में दर्द था,,उसके लिए डाक्टर के पास गए , बोला दवा ले लो,,,,,तो हमने कहा सपशलिस्ट को दिखाओ बोला कोई ज़रुरत नहीं है,,,,इसका दर्द के मारे बुरा हाल था,,किसी तरह अस्पताल पहुंचे तो सर्जरी करनी पड़ी,,उसके लिए पचास सवालों के बाद भी मेडिकल इन्सुरेंस ने कुछ नहीं दिया,,सीधे सीधे दस हज़ार डॉलर लग गए.

पापा : दस हज़ार,,डॉलर !,,वहां तो सुनते हैं मेडिकल सुविधा बहुत अछ्छी है !

संजय : दूर से सबअच्छा लगता है पापा.

पापा : यहाँ से तो हर तीसरा आदमी अमेरिका जाने को लालायित रहता है,,,,,इतने लोग जाते हैं सब खुश रहते होंगे तभी तो जाते हैं.

DO NOT COPY

संजय : जंगल में मोरे नाचा किसने देखा ! एक बार यहाँ से गया तो आपको क्या पता वो वहां खुश है या नहीं.

बारबरा : Baby ! Are we going?

संजय : Ya Baby,,, let me keep the things,,,,(पापा से) पापा,,ये सामान कहाँ रख दें ?

अम्मा : अरे कहीं भी रख दो,,वैसे इधर आओ (ले जाती है) ये कमरा हमने तुम्हारे लिए रखा है,,,,और (दुसरे कमरे को जाती है)यहाँ तरुण सो जायेगा..

बारबरा : (to Tarun) darling ! you would sleep here?

तरुण : Withso many people?

बारबरा : Its only a matter of one night !

संजय : ये बाहर जो लाऊड स्पीकर पे गाने चल रहे हैं ये ऐसे ही चलते रहते हैं..?

पापा : अरे ये नया फैशन है,,,,पूजा भी आजकल माइक लगा कर होती है.

अम्मा : रात को दस तक बंद करने का क़ानून है लेकिन कौन कितना माने इस पर है.

बारबरा : ऐसे में कोई कैसे सो सकता है,,,,An there is so much street noise as well !

तरुण : (कमरे से वापस आते हुए , कुछ सूंघते हुए) There is some kind of smell here !

दीक्षा : बगल में सफाई हो रही होगी,,वहीँ से बदबू आती है कभी कभी,,,गार्बेज क्लीनिंग !

तरुण :..उफ़ !

बारबरा : Baby lets go before shops close.

संजय : I am ready Baby !

पापा : ये तो कुछ मज़ा नहीं आया यार...तुम आए भी और ठीक से मुलाक़ात भी नहीं हो पायी,,,,दो दिन, और उसमें भी तुम जा रहे हो....Dont you think Barbara,,,is it fair ?

बारबरा : Papa,,,we have been missing ou all so we came here first before going anywhere. After all Family first !

पापा : But you are hardly staying here (अम्मा से) आए भी, देहरी छुई और चल भी दिए !

DO NOT COPY

अम्मा : अरे जयपुर जैसलमेर भागा नहीं जा रहा है, चले जाना,,,,हमारा क्या भरोसा,,,आपस में तो हम ठीक से मिल लें,,,,आए हो तो चार पांच दिन तो ठहरो.

संजय : मैं कितनी बार कह चुका हूँ आप लोग अमरीका आइये हमारे साथ रहिये,,,

बारबरा : Amma you have to come this time,,live with us,,,6 महीना इधर 6 महीना उधर,,,

अम्मा : ये मकान छोड़ के ? ताला बंद कर दें तो कोई इसमें घुस ही जाये !

तरुण : Why don’t you people discuss things upon return,,,I want to see the market here.

बारबरा : I want to buy some emroiderie dear, lets go baby !

संजय : (अपना बैग कमरे में रखता है,जाने को तैयार है,फिर कुछ सोचता है, कहता है)

I think you should take Deeksha and go ,,she knows the town,,,waht will I do there just stand and watch you shopping !

बारबरा : So,,,waht are yous aying,,,you dont want to come.

संजय : No I think let me stay here with Amma and Papa.

बारबरा : (Sighs) Sanjay ! you always do that !,,Any way,,Angel darling ! lets go. Deeksha are you happy coming with us ?

दीक्षा : चलो चलते हैं...

सब जाने को निकलते हैं

तरुण बाई बाई में हाथ हिलाता हैं.

अम्मा : हाथ पकड़ के रखना,,खो न जाना,,,,दिल्ली मैं खोने खानेके हादिसे बहुत होते हैं आजकल.

Papa and Amma sit down, sanjay sits with them and talks.

संजय : बोलो अम्मा,,,,पापा तो कुछ बताते नहीं,,इन्होने कैटरेक्ट का भी नहीं बताया,,,हमें पता लगगया तो पूछा तो बोले सब ठीक है.

DO NOT COPY

पापा :क्या तुमको इतनी दूर से टेंशन दें बेटा.

अम्मा : तू एक बात बता,,,तू खुश है ?

संजय : ऐसा क्यों पूछती हो अम्मा ?

अम्मा : नहीं ये बारबरा हिंदुस्तानी नहीं है तो,,,

संजय : वो ठीक है,,अच्छी लड़की है,,बच्चों का घर का मेरा बहुत ख्याल रखती है,,आप सब के लिए भी उसे बड़ा प्यार है.

अम्मा : (पास खिसक कर) वैसे अमरीका में ही सही तुझे कोई हिंदुस्तानी लड़की नहीं मिली ?

संजय : आम हिंदुस्तानी लड़कियां वहां कैसी हैं पूछो मत,,,,,एक दो अच्छे खानदान हों तो छोड़ दो वरना ज़्यादातर शराब पीती हैं,सिगरेट पीती हैं,गालियां तो बाप रे कितनी देती हैं,,,हरेक का कोई न कोई बॉय फ्रंड है,,और वो भी हिंदुस्तानी बॉय फ्रंड इन्हेंनही चाहिए ,,तरुण से पूछना !,,,तो ऐसी लड़कियों से शादी तो नहीं कर सकता था न !

पापा : अच्छा ये बताओ तरुण का नाम तरुण एंजेल रखने का क्या मतलब?

संजय :पापा, बच्चातो हम दोनों का है न....तो तरुण मैं ने रखा एंजेल बारबरा ने सुझाया,,,सो तरुण एंजेल हो गया. आपकी प्रॉब्लम ये है किआप अभी तक बारबरा को एक्सेप्ट नहीं कर पाए हैं,,,कितने दिन पापा,,,,,कितने दिन?,,बहु है आपकी,,एक्सेप्ट तो करना पड़ेगा औरवो अच्छी बहु है.

अम्मा : (सांस छोड़ कर) अच्छा ! तुम्हारे लिए कितने प्यार से दही वड़ा बनाया और तुम,,

संजय : लाओ अम्मा,,,,वडा दे दो ,,दही मत डालना.

पापा : हाँ, ये ठीक है..हमें भी देओ,,हमारे लिए तो दही डाल दो थोड़ा सा.

Amma goes inthe kitchen,opens the fridge andtakes out wada,puts it in the microwarms it,,,makes two plates.

During this time-

पापा: बेटे टाइम बहुत कम है तुम्हारे पास,,ठीक सेमिलना भी नहीहोगा.

संजय :पापा, आप लोग से कहते हैं वहां आ जाइये छह महीने न सही कुछ दिन तो रहिये आकर

Amma comes back with two plates in Wadas, hands them over to Sanjay and Papa. Speaks-

अम्मा : बेटा तुम्ही तो कहते हो तुम्हारे पास टाइम नहीं है,,,सुबह छह बजे निकल जाते हो रात कौआठ बजेआते हो,,,,,शनिवार रविवार तुम्ही लोग आपस में ठीक सेनही मिल पाते तो हम आ कर क्या करेंगे ?,,अकेले बैठे एकदूसरे का मुंह तकेंगे?,,,,,वैसे तो हम लोग यहाँ भी हैं ,,,और यहाँ तोसब लगा बंधा है,,,अपना घर है.

पापा :तुम इतने दिन से हो वहां,,,,कमा भी अच्छा लिया होगा,,ऐसा नहीं हो सकता कितुम वापस आ जाओ , सबसाथ रहेंगे तोएक दुसरे का सहारा होता है .

संजय : (वडा खाना रोक कर) पापा,तीस साल हो गये वहां मुझे,,,(थोड़ा इमोशनल होता है),,जब गया था तब ये नहींसोचा था कि ऐसा फँस जाऊंगा,,,अबनौकरी है, बच्चा है,,,बारबरा स्कूल में पढ़ाती है इसकी नौकरी है,,मेरी नौकरी है,,,,घर है,,,सारा कुछ लगा बंधा है,,,,कई बार मेरा दिल करता है सब छोड़ छाड़ कर वापस चलूँ लेकन अम्मा !,,अब न बारबरा यहाँ रह पायेगी न तरुण यहाँ फिट हो पायेगा,,,और क्या पता शायद मैं भी यहाँ के लिए अनफिट हो गया होऊं.,,,,,, To be honest कभी कभी लगता है मैं खाना बदोश हूँ,,,न अमरीका का मैं हो पाउँगा,,,न यहाँ का मैं रह गया हूँ,,,इसीलिए तो कहता हूँ आप लोग आ जाइये.

पापा : (हंस कर) ताकि हम लोगभी बेवतन,खाना बदोश हो जाएँ !

All laugh.

पापा :अम्मा के हाथ का वडा खाओ और खुश हो जाओ !

अम्मा :तो ऐसे आठ आठ दस दस साल में एक बार शकल दिखाया करोगे ?

संजय : नहीं अभी तक तरुण छोटा था इसलिएनिकल नहीं पाते थे अब अगले साल वोचला जायेगा कॉलेज में,,हॉस्टल में,,तब हम लोग ज़्यादा फेक्सिबल हो जायेंगे...साल में एक बार तो मेंआया ही करूँगा.,,दिल तो मेरा भी करता है न यहाँ आने का,सबसे मिलने का.

Pause, Solence, Sanjay tastes Wada,enjoys it.

संजय : अच्छा अम्मा,दीक्षा तो छुट्टु चाचा की बेटी है न ?

DO NOT COPY

अम्मा : हाँ.

पापा : यहाँ लॉ कर रही है और आईएएस में बैठ रही है.

अम्मा :कोचिंग के लिए दिल्ली आयी है,,

संजय : कोचिंग तो यहाँ बहुत महंगी है,,,मैं उसकी कुछमदद करसकता हूँ?

पापा : क्या करोगे?

संजय : उसको गिफ्ट के तौर पर कुछ दे जाऊं.

पापा :ऐसा क्यों सोचते हो,,,सब ठीक तो चल रहा है.

संजय : नहीं मैं ने आज तक किसी के लिए कुछ किया ही नहीं,,,बड़ा गिल्टी फील होता है,,,न घर के लिए किया न आप लोगों की सेवा की तोसोचता हूँ उसकी पढाई मेंही सहयोग करूँ.

पापा : वो तुम जानो,वो जाने,,,,आये तो बात कर लेना.

Door bell chimes. papa goes to open the door,,,,,

Barbara,Tarun and Deeksha enter with happy voices,laughter and warmth.They have come back.

संजय : अरे तुम लोग आपस आ गए,,,

अम्मा : इतनी जल्दी बाजार हो आये ?

बारबरा : हम गए ही नहीं ,,हम कॉलोनी देख कर आए हैं ,,,,

दीक्षा : ये लोग बोले अभी चलो इधर उधर चक्कर लगाते हैं,,,जगह से फॅमिलियराइज़ करते हैं,,,

पापा : अच्छा,,,,,चलो अच्छा है,,,सब साथ बैठो बात चीत करो...

बारबरा : हम बात करने नहीं आए हैं,,,,,,हम आपको लेने आए हैं.

अम्मा : क्या मतलब ?

संजय : She is right !

DO NOT COPY

पापा : क्या मतलब ?

बारबरा : पापा, अम्मा,,,,,आपने कैसे सोच लिया की हम आपके बगैर शॉपिंग करेंगे ?

तरुण : And how do we eat Chhola Bhatura without you !

अम्मा प्यार से तरुण को गले लगाती है .

बारबरा : आप तैयार तो हैं,,,

अम्मा : (बारबरा को गले लगाती है) तू तो मेरी बड़ी प्यारी बहु है रे ! देखा दीक्षा,,,वो जो टी वि सीरियल से सीख के तू कहती है न कि बहुएं गड़बड़ होती हैं,,इसे देख,,ये तो बड़ी दुलारी बहु है !

संजय : वो इसलिए कि ये हिंदुस्तानी नहीं है और सीरियल देख कर बड़ी नहीं हुई है,,,हा हा हा हा ,,,

सब हँसते हैं.

पापा : नहीं भाई ऐसा नहीं है,,यहाँ भी अच्छी लड़कियां हैं,,यहाँ भी अच्छी सासें हैं ,,ये तुम्हारी माँ देख लो हर शाम कम से कम चार घंटे सीरियल ही देखती हैं,,ये तो अभी तक नहीं बदलीं...

दीक्षा : हर एक थोड़े ही एकसा होता है चाचा.

अम्मा : दीक्षा ,,,तू सीख ले,,बारबरा से,,जिस घर जाना प्यारलुटाना,,,,और सब से प्यार से रहना.

संजय : Deeksha is going to be a sweetheart !,,,, है न !....(दीक्षा को गले लगाता है) मेरी छोटी बहन है न ! अच्छा सुन तेरी आईएएस की कोचिंग कबशुरु होती है,?

दीक्षा : आईएएस नहीं आईएफएस की,,,मैं विदेशों में काम करूंगी ,,,...नेक्स्ट मंथ से शुरू होगी.

संजय : तेरी कोचिंग की सारी फीस तेरा ये भाई देगा,,,चाचा से पापा से मत मांगना.

दीक्षा : नहीं नहीं,,इसकी कोई ज़रुरत नहीं है.

बारबरा : Listen to your brother ,sister !

तरुण : (बात परज़ोर दे कर) बात सुना करो !

पापा : अरे ये तो हिंदी बोलता है.

DO NOT COPY

संजय : इसको इतना ही आता है, बिकॉज़ जब ये बात नहीं सुनता तो हम इससे कहते हैं बात सुना करो,,,सो इसने सीख लिया.

सब हँसते हैं.

बारबरा : चलो चलो,,,दोपहर हो रहा है...

पापा : तो टैक्सी में पांच बनेंगे ?

बारबरा :दो टैक्सी मंगा लेंगे पापा.

संजय : तो चलो...(ऐप पर टैक्सी बुक करता है)

अम्मा : कपडे बदलोगे ?

पापा : बदले तो हैं....मैं ने सिल्क का कुरता पहना हुआ है.

दीक्षा : चाचा का सिल्क का कुरता,,,!

पापा : (अम्मा से) तुम तो अपनी कहो...तुम अपनी अम्मा की दी हुई साडी पहन लो,,,दबा के रखे हो जनम से,,,

अम्मा : तुम बेकार की बात न करो,,,,,हम तैयार हैं,,

संजय : चलो टैक्सी आ गयी...

पापा : चलो बारबरा,,,,तुम खरीदारी करना अम्मा को बाहर खड़ा कर देना नहीं तो ये भी पता नहीं कितनी साड़ियां खरीद लें,,,

अम्मा :तुमहू ले लेना एक दो सिल्क का कुरता,,,एक ही धो के प्रेस करते रहते हो ,,

पापा : मेरे पास पांच हैं,,,

संजय अपने बैग में से कुछ निकालता है,

संजय : मैं अपना चश्मा लेते चलता हूँ..मुझे चश्मा बनवाना है.

पापा :क्यों चश्मा वहां नहीं बनता क्या ?

DO NOT COPY

संजय : बनता है पर,,,

बारबरा : Very expensive Papa !

संजय :यहाँ दो हज़ार रूपए का बनेगा वहां दो हज़ार डॉलर का बनेगा.

अम्मा : इतना महंगा,,,,हाँ !,,,जब जहाँ रहो तब वहां का पता चलता है,,,

इधर उधर की बात चीत/नोंक झोंक केसाथ सब लोग घर के बाहर निकलते हैं,,अम्मा चाबी ले कर दीक्षा को देती हैं,,दीक्षा ताला उठती है...सब बाहर निकलते हैं.

लाइट्स डिम होती हैं.

संगीत और पर्दा..

DO NOT COPY

DO NOT COPY